।। श्री नन्दलाल भारती की रचनायें बनी शोध के विषय।

इण्डियन सोसायटी आफ आथर्स ;इंसाद्धध्इंदौर/ सौ पढ़ा एक आजमगढ़ा की कहावत को चरितार्थ कर रहे हैं वही की मांटी में पले–बढ़े साहित्यकार नन्दलाल भारती जो अपनी कर्मभूमि मालवा से अपने लेखन का सोंधापन दुनिया में बिखेर रहे हैं। श्री भारती उपन्यास,कहानी,काव्य,लघुकथा एवं आलेख संग्रह सहित सोलह पुस्तकें लिख चुके है। ब्लाग लेखक के रूप में पहचाने जाते है। मां सरस्वती की कृपा से उनकी लेखनी निरन्तर चल रही है। वर्तमान में वे अन्य सृजनकर्म के साथ एक लड़की के जीवन पर आधारित उपन्यास वरदान लिख रहे हैं। श्री भारती का समग्र संवृद्ध हिन्दी लेखन अब भाषा शोध वैज्ञानिकों के लिये शोध का विषय बन गया है । इस आशय में लंग्वेज टेकनालोजी रिसर्च सेन्टर, आई. आई.आई.टी.हैदराबाद द्वारा औपचारिक पत्र के माध्यम से शैक्षणिक शोध कार्यों के लिये श्री नन्दलाल भारती से अनुमति मांगी गयी है। यह जानकारी संस्था की भाषा वैज्ञानिक, सुश्री स्मृति सिंह ने ई–मेल दिनांक 16.06.2011के माध्यम से प्रदान की है। श्री नन्दलाल भारती ने अपनी रचनाओं को शैक्षणिक एवं शोध कार्य के लिये अनुमति दे दी है ।